संतोषी माता त कथा (Santoshi mata vrat Katha)

संतोषी माता त कथा (Santoshi mata vrat Katha)

एक बुढ़या थी उसकेसात बेट4 थे,6 कमाने वाले थे और एक कुछ नहX कमाता था. बुढ़या 6 क+ रसोई बनाती ,भोजन कराती और उनसे जो कुछ जूठन बचती वो सातवे को द4 द4ती. एक दन वह प

ी से बोला-द4खो मेरी मां को मुझसे

कतना þेम ह5. वह बोली v नहX होगा þेम वो आपको सबका जूठा जो खलाती ह5.वो बोला ऐसा नहX हो सकता जब तक म। अपनी आंखv से न द4ख लू म। नहX मान सकता.

कुछ दन बाद ौहार आया घर मb सात þकार का भोजन और लð/ बने. वह जांचने केलए सर दद¡ का बहाना कर पतला वò सर पर ओढ़4 रसोई घर मb सो गया, वह कपड़4 मb से सब द4खता रहा सब भाई भोजन करने आये उसने द4खा माँ ने उनकेलए सुCर आसन बछाया हर þकार का भोजन रखा और उ\b बुलाया,वह द4खता रहा.

जब सार4 भाई भोजन करकेउठ4 तो माँ ने उनक+ जूठी थालयv से लड/ केट,कड़4 उठाकर एक लड/ बनाया. @ूठन साफ़ करकेबुढ़या माँ ने उसे पुकारा बेटा छ4हो भाई भोजन कर गए तू कब खायेगा. वो कहने लगा माँ मुझे भोजन नहX करना म। þद4श जा रहा .

माँ ने बोला कल जाता आ आज ही चला जा वो बोला आज ही जा रहा ं यह कह कर वह घर से नकल गया.चलते समय प

ी क+ याद आ गयी.वह गोशाला मb कंड4(उपले)थाप रही थी . वह जाकर बोला – हम जावे þद4श आवbगे कुछ काल,तुम रहयो संतोष से धरम अपनv पाल

वह बोली –

जाओ पया आनंद से हमारो सोच हटाए,
राम भरोसे हम रह4 ईÔर तु£ेसहाय।
दो नशानी आपन द4ख ध म। धीर,
सुध मत हमारी बसा
रयो रखयो मन गंभीर।

वह बोला मेर4 पास तो कुछ नहX ,यह अंगूठी ह5 सो ले और अपनी कुछ नशानी मुझे द4. वह बोली मेर4 पास ा ह5 ,यह गोबर भरा हाथ ह5, यह कह कर उसक+ पीठ पर गोबर केहाथ क+ थप मार दी, वह चल दया,चलते चलते 7ूर द4श पंचा.

वह एक साकार क+ 7ुकान थी.

वह जाकर कहने लगा -भाई मुझे नौकरी पर रख लो. साकार को जरत थी बोला रह जा. लड़केने पूछा त·खा ा दोगे. साकार ने कहा काम द4ख कर दाम मलbगे, अब वह सुबह ७ बजे से १० तक नौकरी करने लगा. कुछ दनv मb वो सारा काम अÆेसे करने लगा. सेठ ने काम द4खकर उसे आधे मुनाफेका हसेदार बना दया. वह कुछ वषx मb बत बड़ा सेठ बन गया और मालक सारा कारोबार उसपर छोड़कर चला गया.

उधर उसक+ प

ी को सास ससुर 7ुःख द4ने लगे सारा घर का काम करवाकर उसको लकड़यां लेकर जंगल मb भेजते थे.

घर मb आट4 से जो भी भूसी नकलती उसक+ रोटी बनाकर रख दी जाती और फूट4 ना

रयल क+ नार4ली मb पानी. एक दन

वह लकड़ी लेने जा रही थी ,राðेmb बत सी महलाएं संतोषी माता का त करती दखाई द4ती हq.

वह वहां खड़ी होकर कथा सुनने लगी और उनसे पूछने लगी बहनv तुम कस द4वता का त करती हो और उसकेकरने से ा फल मलता ह5. यद तुम मुझे इस त का मह बताओगी तो म। तु£ारी बत आभारी हvगी.। तब एक महला बोली सुनो-यह संतोषी माता का त ह5, इसे करने से गरीबी का नाश होता ह5 और जो कुछ मन मb ह5 वो सब संतोषी माता क+ कृपा से मल जाता ह5.

महला बोली -सवा आने का गुड़ चना लेना ,þतेक शुêवार को नराहार रहकर कथा सुनना, मनोकामना पूण¡ होने पर उ,ापन करना . राðेmb लकड़ी केबोझ को बेच दया और उन पैसv से गुड़ चना लेकर माता केत क+ तैयारी कर आगे

चली और सामने मंदर द4खकर पूछने लगी – यह मंदर कसका ह5. सब कहने लगे संतोषी माता का मंदर ह5, यह सुनकर

माता केमंदर mb जाकर माता केचरणv से लपट गयी और वनती करने लगी माँ ml अनजान ंत का कोई नयम नहX
जानती ,ml 7ुखी ं ह4 माता , जगत जननी मेरा 7ुःख 7ूर करो ml आपक+ शरण mb ं
माता को बड़ी दया आयी एक शुêवार बता क+ 7ूसर4 शुêवार उसकेपत का पù आया और तीसर4 शुê उसकेपत ने उसको पैसे भेज दए यह द4ख जेठ – जेठानी का मुँह बन गया और उसको ताने द4ने लगे क+ अब तोह इसकेपास पैसा आ गया अब यह बत इतरायेगी. बेचारी आँखv mb आंसू भरकर संतोषी माता केमंदर चली गयी और माता केचरणv mb बैठकर रोने लगी और रट रट बोली माँ माने पैसा कब माँगा
मुझे पैसे से ा काम मुझे तो अपना सुहाग चाहए . ml तो अपने ामी केदश¡न करना चाहती ं तब माता ने þसन होकर कहा -जा बेटी तेरा ामी आएगा. यह सुनकर ख़ुशी ख़ुशी घर जाकर काम करने लगी अब संतोषी माँ वचार करने लगी इस भोली पुù ी को माने कह तो दया तेरा पत आएगा लेकन कैसे ? वह तो इसे पन mb भी याद नहX करता उसे याद दलाने को मुझे ही जाना पड़4गा इस तरह माता उस बुढ़या केबेट4 केपन mb जाकर कहने लगी साकार के बेट4 सो रहा ह5 या जगता ह5 . वो कहने लगा माँ सोता भी नहX जागता भी नहX कहो ा आVा ह5 ? माँ कहने लगी -तेरा घर बार कुछ ह5 केनहX ,वह बोला -मेर4 पास सब कुछ ह5 माँ -बाप ह5 ब ह5 ा कमी ह5.
माँ बोली -भोले तेरी प
ी घोर कØ उठा रही ह5 तेर4 माँ बाप उसे पर4शानी द4 रह4 ह5 . वह तेर4 लए तरस रही ह5 तू उसक+ सुध ले ,वह बोला हां माँ मुझे पता ह5 पर ml वहां जाऊ कैसे ?
माँ कहने लगी -मेरी बात मान सवेर4 नहा धो कर संतोषी माता का नाम ले ,घी का दीपक जला कर 7ुकान पर चला जा . द4खते द4खते सारा lbन-dgन उतर जायेगा सारा माल बक जायेगा सांझ तक धन का भरी ढ4र लग जायेगा , थोड़ी द4र mb द4ने
वाले
पया लेन लगे सर4 सामान का ाहक सौदा करने लगे
शाम तक धन का भरी ढ4र इकठा हो गया और संतोषी माता का यह चमÿार द4ख कर खुश होने लगा और धन इकठा कर घर ले जाने केलए वò,गहने खरीदने लगा और घर को नकल गया , उधर उसक+ प
ी जंगल mb लकड़ी लेने जाती
ह5, लौटते वा माता जी केमंदर mb आराम करती ह5. þतदन वह वही वाम करती थी अचकन से धूल उड़ने लगी धूल उड़ती द4ख वह माता से पूछने लगी -ह4 माता यह धूल कैसी उड़ रही ह5. ह4 पुù ी तेरा पत आ रहा ह5 अब तू ऐसा कर लकड़ी केतीन ढ4र तैयार कर एक एक नदी केकनार4 रख और 7ूसरा मेर4 मंदर mb रख और तीसरा अपने सर पर तेर4 पत को लकड़यv का गठर द4ख तेर4 लए मोह पैदा होगा वह यहाँ केगा ,नाा पानी खाकर माँ से मलने जायेगा . तब तू लकड़यv का बोझ उठाकर चौक पर जाना और गठर नचे रख कर जोर से आवाज़ लगाना, लो सासुजी , लकड़यv का गठर लो,भूसी क+ रोटी दो ,ना
रयल केखेपड़4 mb पानी दो ,आज मेहमान कौन आया ह5 ? माता जी से
अÆा कह कर जैसा माँ ने कहा वैसा करने लगी .
इतने mb मुसाफर आ गए , सूखी लकड़ी द4ख उनक+ इÆा ई क हम यही आराम करg और भोजन बनाकर खा-पीकर गांव जाएं. आराम करकेगांव को चले गए , उसी समय सर पर लकड़ी का gêर लए वह आती ह5, लकड़यv का बोझ आंगन mb उतारकर जोर से आवाज लगाती ह5- लो सासूजी, लकड़यv का gêर लो, भूसी क+ रोटी दो। आज मेहमान कौन आया ह5
यह सुनकर उसक+ सास बाहर आकर अपने दए ए कØv को भुलाने केलए कहती ह5- ब ऐसे v कह रही ह5 ? तेरा मालक आया ह5। आ बैठ भोजन कर, कपड़4-गहने पहन. उसक+ आवाज सुन उसका पत बाहर आता ह5 अंगूठी द4ख Æाकुल हो जाता ह5। मां से पूछता ह5- मां यह कौन ह5? मां बोली- बेटा यह तेरी ब ह5। जब से तू गया ह5 तब से सार4 गांव mb भटकती फरती ह5। घर का काम-काज कुछ करती नहX, चार पहर आकर खा जाती ह5। वह बोला- ठीक ह5 मां माने इसे भी द4खा और तु£b भी, अब 7ूसर4 घर क+ चाबी दो, उसmb रंगा।
मां बोली- ठीक ह5,तब वह 7ूसर4 मकान क+ तीसरी मंजल का कमरा खोल सारा सामान जमाया। एक दन mb राजा के

महल जैसा ठाट-बाट बन गया। अब ा था? ब सुख भोगने लगी। इतने mb शुêवार आया।

पत से कहा- मुझे संतोषी माता केत का उ,ापन करना ह5। पत बोला- खुशी से कर लो। वह उ,ापन क+ तैयारी करने लगी। जेठानी केलड़कv को भोजन केलए गई। उ\vने कहा ठीक ह5 पर पीछ4 से जेठानी ने अपने बÅv से कहा , भोजन केवl खटाई मांगना, जससे उसका उ,ापन न हो।

लड़केगए खीर खाकर पेट भर गया , लेकन खाते ही कहने लगे- हमb खटाई दो, हमने खीर नहX खानी ह5। वह कहने लगी खटाई नहX दी जाएगी। यह तो संतोषी माता का þसाद ह5।

लड़केउठ खड़4 ए, बोले- पैसा लाओ, भोली ब कुछ जानती नहX थी, उ\b पैसे द4 दए। लड़केउसी समय इमली लेकर खाने लगे। यह द4खकर ब पर माताजी ने गु ा कया। राजा के7ूत उसकेपत को पकड़ कर ले गए। जेठ जेठानी कहने लगे। लूट-लूट कर धन लाया था , अबपता लगेगा जब जेल क+ मार खाएगा। ब से यह सहन नहX ए।

रोती ई मंदर गई, कहने लगी- ह4 माता, यह ा कया, हंसा कर अब भ{v को लाने लगी। माता बोली- बेटी तूने उ,ापन करकेमेरा त भंग कया ह5। वह कहने लगी- माता माने ा अपराध कया ह5, माने भूल से लड़कv को पैसे दए थे, मुझे Uमा करो। ml फर तु£ारा उ,ापन क

ंगी। मां बोली- अब भूल मत करना।

वह कहती ह5- अब भूल नहX होगी,अब वो कैसे आएंगे ? मां बोली- जा तेरा पत तुझे राðेmb आता मलेगा। वह नकली, राह mb पत मला।उसने पूछा – कहां गए थे?

वह कहने लगा- इतना धन जो कमाया ह5 उसका ट5 राजा ने मांगा था, वह भरने गया था। वह खुश होकर बोली अब घर को चलो। कुछ दन बाद फर शुêवार आयाl

वह बोली- मुझे दोबारा माता का उ,ापन करना ह5। पत ने कहा- करो। ब फर जेठ केलड़कv को भोजन को कहने गई। जेठानी ने एक दो बातb सुनाई और तुम सब लोग पहले ही खटाई मांगना।

लड़केभोजन से पहले कहने लगे- हमb खीर नहX खानी, हमारा जी बगड़ता ह5, कुछ खटाई खाने को दो। वह बोली- खटाई कसी को नहX मलेगी, आना हो तो आओ, वह ाण केलड़केलाकर भोजन कराने लगी, दUणा क+ जगह उनको एक-एक फल दया। संतोषी माता þसJ ई।

माता क+ कृपा ई नवमb मास mb उसे सुCर पुù þा` आ. पुù को पाकर þतदन माता जी केमंदर को जाने लगी. मां ने सोचा- यह रोज आती ह5, आज v न इसकेघर चलूं। यह वचार कर माता ने भयानक

प बनाया, गुड़-चने से सना

मुख, ऊपर सूंड केसमान होठ, उस पर म)uयां भन-भन कर रही थी।

द4हली पर पैर रखते ही उसक+ सास च¿ाई- द4खो र4, कोई चुड़5ल चली आ रही ह5, लड़कv इसे नकालो , नहX तो कसी को खा जाएगी। लड़केभगाने लगे, च¿ाकर खड़क+ बंद करने लगे। ब रौशनदान mb से द4ख रही थी, ख़ुशी से च¿ाने लगी- आज मेरी माता जी मेर4 घर आई ह5। वह बÅे को 7ूध पीने से हटाती ह5।

इतने mb सास को êोध आ गया , वह बोली- ा आ ह5 ह5? बÅे को पटक दया. इतने mb मां केþताप से लड़केही लड़केनजर आने लगे।

वह बोली- मां ml जसका त करती ं, यह संतोषी माता ह5, सबने माता जी केचरण पकड़ लए और वनती कर कहने लगे- ह4 माता, हम नादान हq , तु£ारा त भंग कर हमने बड़ा अपराध कया ह5, माता आप हमारा अपराध Uमा करो. इस þकार माता þसJ ई. ब को þसJ हो जैसा फल दया, वैसा माता सबको द4, जो पढ़4 उसका मनोरथ पूण¡ हो, बोलो संतोषी माता क+ जय